UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 28 बेगम हजरत महल (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

बेगम हजरत महल ने 1857 ई० के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में चिरस्मरणीय योगदान किया। ये अवध के नवाब वाजिदअली शाह की बेगम थीं। अवध पर परोक्ष रूप में अँग्रेजों की सत्ता थी; क्योंकि 1801 ई० में पहले नवाब सआदतअली खाँ ने लार्ड वेलेजली की सहायक संधि स्वीकार कर ली थी। जब 1847 ई० में वाजिदअली शाह गद्दी पर बैठे, तब उन्हें अँग्रेजों का हस्तक्षेप अच्छा नहीं लगा। इस कारण लॉर्ड डलहौजी ने उन पर कुशासन का दोष लगाकर कोलकाता में नजरबन्द कर दिया और अवध पर अँग्रेजों का शासन हो गया। अँग्रेजों से असन्तुष्ट होकर क्रान्तिकारियों ने 30 मई, 1857 ई० को लखनऊ में विद्रोह शुरू कर दिया तथा अनेक स्थान अँग्रेजों से छीन लिए। 30 जून को चिनहट में अँग्रेज पराजित हुए और उन्होंने लखनऊ रेजीडेंसी में शरण ली।

बेगम हजरत महल को पुत्र बिरजीसकद्र अवध का नवाब घोषित किया गया। बेगम हजरत महल उसकी संरक्षिका बनीं। इन्होंने योग्य अधिकारी नियुक्त किए और उच्चाधिकारी व सामन्तों को संगठित किया। बेगम ने स्त्रियों का एक सैनिक संगठन बनाया तथा कुछ स्त्रियों को जासूसी का काम सौंपा।

बहादुरशाह जफर के बन्दी बनने और अँग्रेजों का दिल्ली पर अधिकार होने से क्रान्तिकारियों के हौसले कमजोर पड़ने लगे। बेगम ने कैसरबाग के दरवाजे पर ताले लगवा दिए। घनघोर बारिश में बेगम क्रान्तिकारियों का उत्साह बढ़ा रही थीं। उनकी प्रेरणा से क्रान्तिकारी एक-एक इंच भूमि के लिए लड़ रहे थे। अन्ततः हैवलॉक और कैंपवेल ने मार्च 1858 ई० में लखनऊ पर फिर अधिकार कर लिया और रेजीडेंसी में बन्द अँग्रेज परिवारों को मुक्त करा दिया। बेगम हजरत महल अपने पुत्र बिरजीसकद्र के साथ नेपाल चली गईं। बेगम के स्वाभिमान से प्रभावित होकर राणा जंगबहादुर ने इन्हें नेपाल में रहने की जगह दिलाई। सन् 1874 ई० में इन वीरांगना का निधन हो गया।

बेगम हजरत महल ने भारतीय परम्परा के अनुसार अँग्रेज कैदियों और परिवारों को सुरक्षित रखा। वस्तुतः बेगम हजरत महल का व्यक्तित्व भारत के नारी समाज का प्रतिनिधित्व करता है।

https://www.evidyarthi.in/